RAN-2101000103040036

RAN-2101000103040036

S.Y.B.A. (Sem. III) Examination November - 2023

Hindi (Paper - V) Chhayawdi Kavita (Subsidiary)

Chhayawadi Kavya Vaibhav - Dr. B.K. Kalashva

Time: 2 Hours] **[Total Marks: 50**

સૂચના : / Instructions

(૧) **નીચે દર્શાવેલ ☛ નિશાનીવાળી વિગતો ઉત્તરવહી પર અવશ્ય લખવી.**
Fill up strictly the details of ☛ signs on your answer book

Name of the Examination:

☛ **S.Y.B.A. (Sem. III)**

Name of the Subject :

☛ **Hindi (Paper V) Chhayawdi Kavita (Subsidiary) Chhayawadi Kavya Vaibhav - Dr. B.K. Kalashva**

Subject Code No.: **2101000103040036**

Seat No.:

Student's Signature

प्रश्न. १ निम्नलिखित बहुविकल्पी प्रश्नो के सही उत्तर लिखिए। **१०**

(१) जयशंकर प्रसाद का परिवार काशी में किस नाम से विख्यात था?

(A) शिव भक्त (B) सुँघनी साहु

(C) वैष्णव (D) इनमें से कोई नहीं

(२) 'सरोजस्मृति' किस की रचना है?

(A) सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' (B) सुमित्रानंदन पन्त

(C) जयशंकर प्रसाद (D) महादेवी वर्मा

(३) आधुनिक काल में 'छायावाद' का आगमन किस युग के बाद होता है?

(A) प्रगतिवाद (B) भारतेंदु युग

(C) प्रयोगवाद (D) द्विवेदी युग

(४) महादेवी वर्मा के साहित्य की प्रेरक शक्ति है....

(A) करुणा (B) अध्यात्म

(C) प्रकृति (D) दया

(५) 'भारतमाता' कविता किस की है?

(A) जयशंकर प्रसाद (B) सुमित्रानंदन पन्त

(C) सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' (D) महादेवी वर्मा

प्रश्न. २ ''जागो फिर एक बार' देशभक्ति से पूर्ण जागरण गीत है''- इस कथन को सोदाहरण समझाइए । **१३**

अथवा

प्रश्न. २ 'जुही की कली' काव्य के प्रमुख वर्ण्य-विषय पर प्रकाश डालिए। **१३**

प्रश्न. ३ ''बापू के प्रति' कविता में कवि के आदर्शों की साकार अभिव्यक्ति हुई है''- सोदाहरण स्पष्ट कीजिए। **१३**

अथवा

प्रश्न. ३ 'प्रथम रश्मि' कविता के केन्द्रीय भाव को बताइए। **१३**

प्रश्न. ४(अ) टिप्पणी लिखिए। **७**

(१) 'बीती' विभावरी जागरी' का उद्देश्य

अथवा

(१) **'मधुर-मधुर मेरे दीपक जल' में व्यक्त रहस्यवादी चेतना**

(ब) **ससंदर्भ व्याख्या कीजिए।** **७**

(१) मदिरा की वह नदी बहाती आती,
थके हुए जीवों को सस्नेह
प्याला वह एक पिलाती,
सुलाती उन्हें अंक पर अपने,
दिखलाती फिर विस्मृति के वह कितने मीठे सपने,
अर्द्धरात्रि की निश्चलता में हो जाती वह लीन,
कवि का बढ़ जाता अनुराग,
विरहाकुल कमनीय कंठ से
आप निकल पडता तब एक विहाग।

अथवा

(१) ''बरसाती आँखों के बादल बनते जहाँ भेर करुणा जल।
लहरें टकरातीं अनंत की पाकर जहाँ किनारा।
हेम-कुम्भ ले उषा सवेरे भरती ढुलकाती सुख मेरे।
मदिर ऊंधते रहते जब जग कर रजनी भर तारा।''